डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम्.ए., बी.एड्., पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि ***कु. सुजाता रघुनाथ थोरात*** द्वारा लिखित ***''नरेंद्र कोहली के नाटकों का अनुशीलन''*** यह लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान - कोल्हापुर.

तिथि - 17 फरवरी, 2003.

17 FEB 2003

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)

अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि *कु. सुजाता रघुनाथ थोरात* द्वारा लिखित *''नरेंद्र कोहली के नाटकों का अनुशीलन''* यह लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

एम्. फिल. हिंदी विभाग प्रमुख,
प्रा. डॉ. भरत धोंडीराम सगरे
लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज,
सातारा (महाराष्ट्र).

प्राचार्य,
मा. रविंद्र गणपतराव चव्हाण
लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज,
सातारा (महाराष्ट्र).

प्राचार्य,
लाल बहादूर शास्त्री कॉलेज,
सातारा

स्थान - सातारा.

तिथि - फरवरी, 2003.

17 FEB 2003

डॉ. यादवराव बाबुराव धुमाळ
एम्.ए., पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
वेणूताई चव्हाण महाविद्यालय, कराड.
तथा
सदस्य, विद्वत सभा,
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

प्रमाणपत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि *कु. सुजाता रघुनाथ थोरात* ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए *''नरेंद्र कोहली के नाटकों का अनुशीलन''* शीर्षक से प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह शोधार्थी की मौलिक कृति है, जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोधार्थी के प्रस्तुत लघु शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

शोध-निर्देशक

स्थान :- कराड.

तिथि :- फरवरी, 2003.

17 FEB 2003

(डॉ. यादवराव बाबुबराव धुमाळ)
प्रा. डॉ. या. बा. धुमाळ
रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
वेणूताई चव्हाण कॉलेज
कराड (महाराष्ट्र)

कु. सुजाता रघुनाथ थोरात
एम. ए. (हिंदी)

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करती हूँ कि *''नरेंद्र कोहली के नाटकों का अनुशीलन''* यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के हेतु प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय में एम्. फिल. उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्रा

स्थान : कराड.

तिथि : फरवरी, 2003.

17 FEB 2003

(कु. सुजाता रघुनाथ थोरात)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में हमने नरेंद्र कोहली के 'शम्बूक की हत्या', 'हत्यारे' और 'निर्णय रूका हुआ' इन तीन नाटकों को शोध का विषय बनाकर इनका अनुशीलन किया है। नरेंद्र कोहली ने स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। आपने सन् 1975 से लेकर आज तक अपनी नाट्य-यात्रा में मौलिक नाटकों की निर्मिति की है। चिंतनशील कथ्य, प्रभावी शैली, मंचन की दृष्टि, विविध प्रयोग, नए तंत्र के कारण आपके नाटक लोकप्रिय और प्रयोगशील रहे हैं। आपने-अपने नाट्य-यात्रा में जनता की जीती-जागति ज्वलंत समस्याओं का, उसकी परिस्थितियों का तथा प्रतिक्रियाओं का, अत्याचारों का, शोषण का सूक्ष्म निरीक्षण एवं परीक्षण करके समाज के सुख-दुःख तथा आशा और आकांक्षाओं को नाटक की कथावस्तु बनाने का प्रयास किया है। आपने नाट्य-यात्रा में उत्कृष्ट मिथक नाटक की निर्मिति की है। ऐतिहासिक, पौराणिक कथा और पात्रों से मिथ को लेकर समसामायिक विषयवस्तु, समस्या को आपने अपने नाटक में प्रस्तुत किया है। आप चिंतनशील द्रष्टा साहित्यकार हैं। आपने आलोच्य नाटकों द्वारा समसामायिक परस्थिति पर व्यंग्य करते हुए क्लिष्ट विषय को सरलता से पेश कर समाज को आनेवाली विपत्ति से परिचित कर उसका सामना करने की शक्ति प्रदान की है। समाज को जागृत करने का काम पात्रों के चित्रण, संवाद द्वारा किया है। आपने मिथक नाटक में प्राचीनता और आधुनिकता का सुंदर समन्वय कर मिथकीय शैली द्वारा व्यापक आशय प्रकट किया है। आपके नाटकों में मनोविश्लेषणात्मक शैली द्वारा पारिवारिक संघर्ष को स्पष्ट किया है। आपके नाटक में व्याख्यात्मक शैली और वर्णनात्मक शैली, मिथकीय शैली द्वारा नए नाट्य तंत्र से एक ही मंच पर मुख्य कथानक के पात्रों द्वारा नए कथावस्तु को अभिनय द्वारा पाठकों तक लाने का प्रयत्न किया है। आपके आलोच्य नाटक समाज पर विशेष प्रभाव छोड़ते हैं और नाटक साहित्य में आपके नाटक अपना विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान भी रखते हैं। इस लघु शोध-प्रबंध में उनके बहुचर्चित, प्रमुख और महत्त्वपूर्ण नाटकों का मूल्यांकन किया है।

नरेंद्र कोहली ने आज़ादी के बाद राजनीतिज्ञ और शासक द्वारा आम जनता पर होनेवाले अत्याचार का, शोषण से अभावग्रस्त जनता का चित्रण किया है। आधुनिक सुविधाओं के

बीच सामान्य और मध्यवर्गीय व्यक्ति अपनी इच्छाओं, आकाक्षाओं, समस्याओं, अफसरशाही के तथा भ्रष्टाचारों, अत्याचारों, शोषण की अवस्थाओं आदि का चित्रण इन नाटकों में विस्तार से किया गया है । ब्राह्मण, क्लर्क, कांस्टेबल, सब-इन्स्पेक्टर, अनिल, शालिनी, शांति, बनारसीदास, शर्मा, वर्मा, सावित्री, ऐसे लोगों को नरेंद्र कोहलीजी ने अपने लेखन का विषय बनाया है। नरेंद्र कोहली का जीवनपट देखने के बाद ऐसा लगता है कि जो जीवन में छोटे-छोटे सुख नहीं पा सका वह अपने पात्रों को काल्पनिक सुख क्या देगा ? नरेंद्रजी कहानी, उपन्यास, नाटक, व्यंग्य, बाल-साहित्य से साहित्य के क्षेत्र में अपना स्थान विशिष्ट रूप में निर्माण कर सके।

नरेंद्र कोहली अभावग्रस्त परिवार में पले किंतु इसी अभाव के कारण उनके जीवन में कुत्सितता का निर्माण नहीं हुआ। नरेंद्रजी की पूरी जिंदगी गतिशील है, इसमें ठहराओं के बावजूद भी उर्ध्वगामिता अधिक देखने को मिलती है। उनका स्वभाव मातृभक्ति से परिपूर्ण है। वे अत्यंत संवेदनशील तथा प्रसन्नचित्त व्यक्ति हैं। वे हँसमुख, विनोदी, ईमानदार, महत्त्वकांक्षी, जिंदादिल व्यक्तित्व के हैं। उन्होंने समाज में स्थित आधुनिक प्रवृत्तियाँ, स्थितियाँ और समस्याओं का अलग अध्ययन करके अपने नाटक के पात्रों को उपस्थित किया है, जिसमें सामाजिक पीड़ा की वास्तविकता को चित्रित करने का नरेंद्रजी का प्रयास सफल रहा है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में हमने उनके बहुचर्चित 'शम्बूक की हत्या', 'हत्यारे' और 'निर्णय रूका हुआ' नाटकों को शोध का विषय बनाया है। नरेंद्र के लगभग सभी नाटक समस्या प्रधान हैं। सामाजिक समस्याओं के साथ परिवेश से जुड़े सभी सवालों का, समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण नरेंद्रजी ने अपने नाटकों में किया है। आधुनिक रिश्वतखोरी, अत्याचार, शोषण का चित्र 'शम्बूक की हत्या' में ब्राह्मण द्वारा स्पष्ट किया है। समाज में अधिक संतानों से आनेवाली आर्थिक विषमता के कारण रमेश जैसे नवयुवकों की मृत्यु को 'हत्यारे' द्वारा स्पष्ट किया। आधुनिक युग में मध्यवर्गीय व्यक्ति के लिए मकान बनवाना भी कठिन बात बनी है, इस पर भी व्यंग्य किया है। नरेंद्र कोहलीजी ने आलोच्य नाटकों द्वारा उदारता, सहनशीलता, समर्पणशीलता, शक्तिमत्ता को अध्यापन के साथ-साथ समाज में स्थित ज्वालाग्रही समस्याओं को प्रमुखता से स्पष्ट किया है। समस्या प्रधान नाटकों की निर्मिति से समाज को नई दिशा दिखलाने का प्रयास नाटककार नरेंद्र कोहली करते हैं, जिसमें नरेंद्र कोहली का नाम भी बड़े गर्व के

साथ लिया जाता है। इन विवेच्य तीन नाटकों के विषय वैविध्य को दिखाकर इनका शैल्पिक अनुशीलन करना इस लघु शोध-प्रबंध का उद्देश्य है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को हमने पाँच अध्यायों में विभाजित किया है -

प्रथम अध्याय- ''नरेंद्र काहली के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन''

इस अध्याय में नरेंद्र कोहली के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का परिचय दिया है। व्यक्तित्व के अंतर्गत कोहलीजी की जन्म तिथि एवं जन्मस्थान, पारिवारिक स्थिति, शिक्षा एवं नौकरी, वैवाहिक जीवन, रहन-सहन, रुचि एवं स्वभाव आदि पर प्रकाश डाला है। कृतित्व के अंतर्गत उनकी लेखन-प्रक्रिया, साहित्यारंभ, साहित्य सृजन का उद्देश्य तथा विभिन्न विधाओं का सामान्य परिचय दिया है। अंत में प्रस्तृत अध्याय का निचोड़ निष्कर्ष रूप में दिया है। और इसमें यह दिखाया है कि नरेंद्र कोहली एक बहुमुखी साहित्यकार हैं।

द्वितीय अध्याय - ''नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटकों के कथावस्तु का अनुशीलन''

अस अध्याय में नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटक 'शम्बूक की हत्या', 'हत्यारे', 'निर्णय रूका हुआ', इन तीन नाटकों की कथावस्तु का अनुशीलन प्रस्तुत करके यह स्पष्ट कर दिया है कि इन आलोच्य नाटकों की कथावस्तुएँ अलग-अलग विषयों पर आधारित हैं। कथावस्तु में प्राचीन संदर्भ को आधुनिक युगबोध के साथ जोड़ा है।

तृतीय अध्याय - ''नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटकों के पात्रों का अनुशीलन''

इस अध्याय में नरेंद्र कोहली के 'शम्बूक की हत्या', 'हत्यारे', 'निर्णय रूका हुआ' आदि नाटक के पात्रों का नाटक के तत्व के आधार पर अनुशीलन करके अंत में यह स्पष्ट कर दिया है कि आलोच्य नाटक के पात्र विभिन्न स्तर के, विभिन्न विचारधारा के, प्राचीन और आधुनिकता से जुड़े होने के कारण प्राचीनता में नवीनता की तलाश करते हैं।

चतुर्थ अध्याय - ''नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटकों की मंचीयता का अनुशीलन''

इस अध्याय में नरेंद्र कोहली के नाटकों का मंचीयता की दृष्टि से महत्त्व विशद करके सफल मंचन के लिए नाटककार ने बीच-बीच में निर्देश दिए हैं। आलोच्य नाटक मंचीयता की दृष्टि से सफल हैं। पात्रों की हरकतें, संवाद, वेशभूषा, संगीत योजना नाटक को सफल बनाती हैं।

पंचम अध्याय - ''नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटकों के भाषाशिल्प का अनुशीलन''

इस अध्याय में नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटकों की भाषा सरल, स्पष्ट एवं प्रभावशाली है। भाषा शैली के विभिन्न प्रकार नाटक को आकर्षक बनाते हैं। पात्रानुकूल भाषा, पात्रों के स्तरों के आधार पर भाषा का प्रयोग, भाषा और शैली में पात्रों की भाव-भावनाओं का सुस्पष्ट चित्रण मिलता है। विविध प्रकार की भाषा और विविध प्रकार की शैली से आलोच्य नाटक सफल बने हैं।

उपसंहार -

इसमें उपलब्ध निष्कर्षों को समाकलित किया गया है। साथ-ही-साथ नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटकों में चित्रित जन-जीवन के विविध आयामों को तलाशने का प्रयास किया गया है।

ऋणनिर्देश

मेरा यह महद्भाग्य है कि मुझे आदरणीय गुरुवर्य प्रा. डॉ. वाय. बी. धुमालजी के पांडित्यपूर्ण निर्देशन में शोध-कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। धुमालजी के प्रेरक, उदार तथा प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व के कारण ही मैं अपना शोध-कार्य पूर्ण करने में सफल हो पाई। डॉ. वाय. बी. धुमालजी के अमूल्य निर्देशों का ही यह शुभ परिणाम है कि मेरा यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्णत्व पा सका। श्रद्धेय गुरुवर्य प्रा. डॉ. वाय. बी. धुमालजी के साथ-साथ मेरे इस शोध-कार्य में सौ. नयना धुमाल ने भी अपने स्नेहभाव से मेरे आत्मविश्वास को बरकरार रखने का कार्य किया। सौ. नयना धुमाल के ममत्वपूर्ण व्यवहार के प्रति मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगी। प्रा. डॉ. वाय. बी. धुमालजी के प्रति मेरे कृतज्ञतापूर्ण भावों को अभिव्यक्त करने में मेरा शब्द-भंडार असमर्थ है।

इस शोध-संकल्प की पूर्ति में जिनसे मुझे प्रोत्साहन मिला उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना मैं अपना कर्तव्य मानती हूँ। लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय के आदरणीय प्राचार्य आर. जी. चव्हाण, इस महाविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रा. जयवंत जाधव, एम्. फिल. के

प्रमुख डॉ. बी. डी. सगरे आदि के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। जिन्होंने मौलिक निर्देशन के साथ शोध-सामग्री जुटाने में मुझे सहयोग दिया है।

मेरे इस लघु शोध-कार्य में मेरे परमपूज्य पिताजी श्री. आर. एम्. थोरात और मेरी परमपूज्य माताजी सौ. सत्यभामा थोरात का प्रोत्साहन मेरे लिए प्रेरणादायी रहा है। इसके अलावा मेरी बड़ी बहन सौ. माधवी और जिजाजी श्री. एल्. बी. जाधव और भतिजी एवं भतीजा की साहायता, बड़े भाई विनायक की प्रेरणा एवं सहकार्य और मेरे मौसी-मौसाजी के शुभाशीश के कारण मैं यह कार्य पूरा कर सकी। इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने की सबसे ज्यादा प्रेरणा मुझे मेरा छोटा भाई हेमंत से मिली जिससे यह कार्य मैं पूरा कर सकी।

इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने में मेरे सभी गुरुवर्य, महिला महाविद्यालय, उंब्रज के आदरणीय प्राचार्या और सहपाठी का आशीर्वाद भी मेरे लिए महत्त्वपूर्ण है। इस प्रबंध को पूरा करने में मेरी सहेली सौ. ज्योती, कु. सुजाता, कु. स्नेहल, कु. रूपाली का प्रोत्साहन तथा सहयोग भी मेरे लिए महत्त्वपूर्ण रहा है।

मेरे इस लघु-शोध-कार्य में प्रा. औताडे, डॉ. निकम, प्रा. मुजावर की प्रेरणा और सहयोग भी मुझे प्राप्त हुआ, इसीलिए मैं उनके प्रति आभारी हूँ।

इस प्रबंध के टंकण का अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य श्री. अल्ताफ मोमीन ने किया, उनके सहकार्य के लिए मैं उनकी भी अभारी हूँ।

शोध-छात्रा

Sujata

कु. सुजाता रघुनाथ थोरात